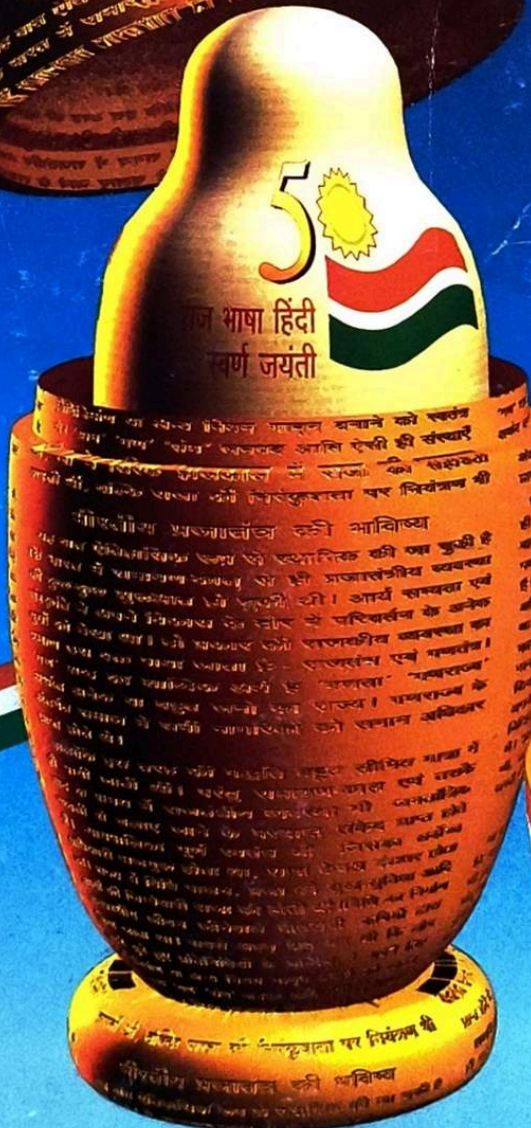


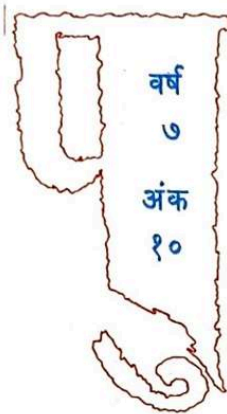
पुष्पक

वर्ष - 7

अंक - 10

केन्द्रीय प्रशिक्षण प्रतिष्ठान की घरेलू पत्रिका





पुष्पक

संपादक
श्रीमती शुष्मिणी
मुखपृष्ठ, ले आउट एवं
मुद्रण मार्गदर्शन
तापस चक्रवर्ती

सहयोग
बी. बद्रीनारायण
बी.यु. भास्कर रेड्डी



चित्रकार श्री तापस चक्रवर्ती, प्रबंधक (मुद्रण) की कल्पना में संविधान में मान्य राजभाषा हिन्दी का मंडार असीम है, जिसमें झाँकने पर उन्हें राजभाषा के 50 वर्ष की अथक गति - प्रगति दिखाई देती है।

आदरणीय पाठको,

पुष्पक का नवीनतम अंक आपकी सेवा में प्रस्तुत है। इस अंक को आपके समक्ष लाने में जो विलंब हुआ है, उसके लिए हमें खेद है। पुष्पक अपने आरोहण के बाद एक स्थिरता पश्चात् पुनः अपने गंतव्य की ओर अग्रसर हो रहा है। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपके सुझावों और आलोचनात्मक समीक्षाओं की हमें प्रतीक्षा है ताकि हम इसे और अधिक बेहतर बना सकें।

आपके मार्गदर्शन एवं स्नेहाशीष की आकांक्षा में,

- संपादक



अनुक्रमणिका

स्तंभ :	
संदेश.....	02
संपादकीय.....	01
प्रतिक्रियाएँ.....	03
हास-परिहास.....	20
वर्ग पहली.....	45
कहानी :	
ऊँची उड़ान.....	07
आकाश दीप.....	29
नसीहत.....	31
रमता राम.....	41
कविता :	
मनुज और तूफान.....	05
हम.....	05
याद.....	06
फूल का बंधन.....	06
आजकल के नेता.....	08
एक नारा भाई चारा.....	08
जमीन उगलेगी सोना.....	10
आई.सी. ८१४ का हाइजैक.....	11
चेहरे.....	11
कोई नहीं जानता.....	13
माँ और ममता.....	21
इन हथकड़ियों को.....	
कौन तोड़ेगा.....	22
असहाय.....	22
मेरी राजभाषा.....	27
मौसम की पहली बरसात.....	27
अनुभव.....	27
हमारी कार्गो.....	28
और इनसान ने.....	
भगवान बनाया.....	28
लेख :	
कर्मफल.....	09
उचित शब्दों का चयन.....	12
वेदोत्तर कालीन विमानविद्या.....	14
हिंदी की सामासिक प्रकृति.....	32
अगस्त क्रांति की याद में.....	36
साधुवाद बनाम धन्यवाद.....	40
प्रभात किरण.....	44
खेल के प्रांगण से.....	44
पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टि कोण संबंधित लेखक के हैं तथा उनकी मौलिकता एवं पूर्व प्रकाशित न होने से संबंधित उत्तरदायित्व लेखक के हैं, इंडियन एयरलाइन्स लि. का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।	

विज्ञान पर प्राचीन ग्रन्थों के उपलब्ध न होने से हम यह नहीं कह सकते कि प्राचीन काल में विज्ञान के क्षेत्र में विद्वान ऋषि अज्ञानी थे। यह माना जाता है कि वस्तुतः प्राचीनकाल में विद्वानों की मान्यता थी कि विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के रहस्यों को गुप्त रखना चाहिए,

ॐ
ॐ
ॐ



वेदोत्तरकालीन विमान विद्या

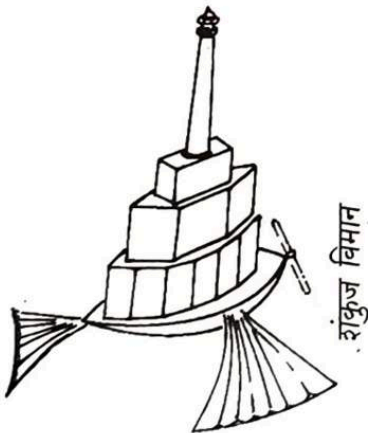
वे

दों में विमान विद्या के वर्णन के पश्चात् रामायण में आकाश में उड़ने वाले विमान के वर्णन से उस काल में विमानों की उपस्थिति का बोध होता है। लंका पर विजय प्राप्त कर लेने के पश्चात् श्री रामचन्द्र का सीता - लक्ष्मण-सहित पुष्पक विमान (वह विमान इच्छानुसार कार्य करने वाला तथा सब प्रकार से सुखद था) से अयोध्या लौटने से यह स्पष्ट हो जाता है कि विमान विद्या रामायणकाल में विद्यमान रही होगी।

जनुश्रुतियों और पुराणकथाओं में तो नारद, देव-यक्ष-किन्नरों के आकाश मार्ग से विचरण का वर्णन बहुत हुआ है। आकाश में उड़नखटोला के नाम से भी विमानों की चर्चा भारत में अनेक बार तब सुनी गई जब संसार में अन्यत्र विमानों का प्रचलन ही नहीं था। केवल जनुश्रुतियों में ही नहीं संस्कृत-सहित्य में भी आकाशयानों की चर्चा देखने को मिलती है अभिज्ञान शाकुन्तल में महाकवि कालिदास वर्णन करते हैं - राजा दुष्यन्त दैत्यों को मारने के लिए जिस रथ पर गए तथा मार कर इन्द्रलोक से भूलोक पर जिस रथ से उतर रहे थे वह एक प्रकार

का विमान ही था। उस समय अत्यन्त वेग से उतरने के कारण दुष्यन्त को ऐसा लगता है जैसे मनुष्य लोक उसके पास उछाला जा रहा हो।

एवमेव महाकवि कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में दिलीप की संतानहीनता का कारण बताते हुए गुरु वसिष्ठ कहते हैं कि एक बाद इन्द्रलोक से लौटते हुए दिलीप कल्पतरु की छाया में आश्रित सुरभि के प्रति शिष्ट-आचरण न करने के कारण दिलीप को वह शाप दे देती है परन्तु आकाश गंगा के नाद के कारण दिलीप अथवा उसके सारथि को शाप नहीं सुनाई देता। यहाँ यह सब बताने का उद्देश्य यह है कि दिलीप विमान में रहे होंगे क्योंकि आकाशगंगा वायुओं के परिवह नामक मार्ग में ही हैं। इतना ही नहीं रघुवंश के पाँचवें सर्ग में रघु तथा कौत्स के वर्णन प्रसंग में रघु के निर्बाध (तीव्र) गति वाले रथ का कालिदास वर्णन करते हैं। वस्तुतः यह रथ ही विमान हैं। इसी प्रकार रघुवंश के ही त्रयोदश सर्ग में लंका पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् सीता के साथ राम जिस पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या



* संस्कृत प्राध्यापिका
श्री वैकुण्ठेश्वर कॉलेज, नई दिल्ली